प्रश्न :2 → भारत में वन संसाधन का वर्णन कीजिए?

उत्तर :→ वन संसाधन का अभिप्राय वनों में उगने वाली या वनों में मिलने वाली प्राकृतिक वनस्पतियों से है। प्राकृतिक वनस्पति से अभिप्राय भौतिक दशाओं अथवा परिस्थितियों में स्वत: उगने वाली वनस्पति से है, जिसमें पेड़-पौधे, झाड़िया, घास आदि सम्मिलित होते है। हमारे प्राचीन धर्म ग्रन्थों में वनों का महत्व वर्णित है। वन ऋषि मुनियों की तपो भूमि रहे है।

भारत में वनों का भौगोलिक वितरण एक समान नही है। उत्तर भारत के पर्वतीय क्षेत्रों एवं दक्षिणी भारत के पठारी भागों में वन क्षेत्र अधिक है। भारत में वनों के अन्तर्गत कुल क्षेत्रफल के 20.5% भूमि में वन पाया जाता है। भारत के राज्यों में वनों का वितरण एक समान नही है जैसे: राज्य का कुल क्षेत्रफल का:—

मिजोरम में — 88.63% भूमि पर
नागालैंड — 82.75%
अरुणाचल प्रदेश — 80.98%
त्रिपुरा में — 77.77%
लक्षद्वीप — 78.12%
मणिपुर — 76.5%
छत्तीसगढ़ — 44%
सिक्किम — 45.97%
उत्तराखण्ड — 45.44%
गोवा — 58.99%
केरल — 40.03%
उड़ीसा — 31.6%
हिमाचल प्रदेश — 25.8%
राजस्थान — 9.6%
जम्मू कश्मीर — 9.6%
पंजाब — 3%
हरियाणा में 3.6% आदि है।

Scanned with CamScanner

भारत में जलवायु की भिन्नता के अनुसार ही यहाँ विषुवत रेखीय से लेकर अल्पाइन किस्म की वनस्पति पाई जाती है। अतः भारत वन संसाधन की दृष्टि से वनों को निम्नलिखित भागों में बाँटा गया है:-

(1) उष्णकटिबंधीय सदापर्णी वन
(2) पतझड़ या पर्णपाती वन
(3) मानसूनी वन
(4) मरुस्थलीय तथा अर्ध-मरुस्थलीय वन
(5) मैंग्रोव अथवा ज्वारीय वन
(6) शीतोष्ण कटिबंधीय सदापर्णी वन
(7) हिमालय प्रदेशीय वनस्पति

(1) उष्ण कटिबंधीय सदापर्णी वन:→ इस प्रकार के वन भारत में वहाँ पाई जाती है जहाँ वर्षा 250 c.m. से अधिक होती है, वार्षिक औसत तापमान 27° c से, तथा आर्द्रता 70% से भी अधिक होती है। यह वन विषुवत रेखीय वनों की जाति है। अधिक वर्षा और ऊँचे ताप के कारण यह वन बहुत घने और सदाहरित होते हैं। वृक्षों की ऊँचाई 30 से 60 मीटर तक होती है इनकी शाखाएँ छोटी छोटी होती है, वृक्षों की ऊपरी सिरे छतरीनुमा होते हैं। वृक्ष एक दूसरे के समीप होते हैं, जिसके कारण सूर्य-प्रकाश भी कठिनाई से भूमि तक पहुंच पाता है। इन वनों में मिलने वाले वृक्षों में गरजन, होपिया, नागकेसर, जेकू, आयनी, चपलास, आम, चीप, मेचीलस आदि हैं। यह भारत के प्रमुख क्षेत्रों में पाया जाता है जैसे:-
(i) महाराष्ट्र, कर्नाटक औ केरल राज्यों के पश्चिमी घाट।
(ii) अण्डमान और निकोबार द्वीप समूह।
(iii) उत्तरी पूर्वी भारत में बंगाल और असम के पर्वतीय ढाल।
इन वनों से कीमती लकड़ियाँ प्राप्त होती है।

(2) पतझड़ या पर्णपातीय वन:→ यह वन साल में एक बार अपना पत्ता गिरा देते हैं, इस लिए इन्हें पतझड वन

या पर्णपाती वन कहते हैं। भारत में जहाँ वर्षा 150 c.m. से 250 c.m होती है वहाँ यह वन पाये जाते हैं। इन प्रदेशों में केवल वर्षा काल में ही जल वृष्टि होती है। अतः गर्मी के प्रारम्भ से पहले ये वृक्ष अपनी पत्तियाँ गिरा देते हैं, ताकि यह शुष्क वायु और धूप से सुरक्षित रह सके। यह भारत के निम्न क्षेत्रों में पाये जाते हैं जैसे :-

(i) उत्तरी पर्वतीय प्रदेश के निचले भाग - तराई के सदापर्णी वनों से ठीक नीचे
(ii) विन्ध्याचल और सतपुड़ा पर्वत, छोटानागपुर का पठार तथा असम की पहाड़ियों पर।
(iii) दक्षिणी-पूर्वी घाट पर।

इस तरह इन पतझड़ वनों को दो वर्गों में अंकित किया जा सकता है (क) दक्षिणी क्षेत्रीय वन (ख) उत्तरी क्षेत्रीय वन।

(क) दक्षिणी क्षेत्रीय वन :→ जहाँ तापमान औसतन 27°C रहता है वहाँ यह वन पाया जाता है। यह वे मानसूनी वन हैं जो कि दक्षिणी भारत की पहाड़ी भूमि पर उगते हैं। वृक्षों की लम्बाई 30 मीटर से भी अधिक हो जाती है। ये वन पतझड़ होते हैं, लेकिन सदाबहार वन जैसे दिखते हैं। कुछ वृक्ष अपने पत्ते अप्रैल माह में गिरा देते हैं, किन्तु कुछ वृक्ष अपने पत्ते शीत काल के प्रारम्भ में गिरा देते हैं जैसे - सागौन। तुन एवं शीशम वृक्षों के नये पत्ते वसन्तकाल में उग आते हैं तथा ग्रीष्म काल में वृक्ष पूरी तरह हरे हो जाते हैं इन वृक्षों में सेलग, अमलतास, हल्दू, बाँस आदि महत्वपूर्ण हैं।

(ख) उत्तरी क्षेत्रीय वन :→ जहाँ तापमान औसतन 27°C और वर्षा 100-से 200 C.m होती है यह वन भारत में पाये जाते हैं। इनका विस्तार गंगा के मैदान तथा कुछ उपरी भागों में पाया जाता है। इस भाग में साल के वृक्ष बहुतायत से उगते हैं। ग्रीष्म काल में थोड़े समय के लिये वृक्ष पत्ता रहित हो जाते हैं। इन वृक्षों में जामुन, जारुल, बिंगा, हरमीनालिया आदि अधिक भाग में उगते हैं। वृक्षों के नीचे घास व झाड़ियाँ अधिक पाई जाती हैं। देश में साल के वनों का क्षेत्रफल 11600 वर्ग K.m और सागौन के वनों का क्षेत्रफल 8,900 वर्ग K.m है। इन वनों से चमड़ा रंगने, तेल तथा वार्निश के पदार्थ पैदा होते हैं। इनके अलावा इन वनों से महुआ, कत्था, पैडुक, शहतूत आदि की प्राप्ति होती है

इस वन के लकड़ी का व्यवसायिक उपयोग अधिक है।

(3) मानसूनी वन :→ यह वन 50 cm से 100 cm तक वर्षा वाले क्षेत्रों में पाये जाते हैं। इन वृक्षों की जड़े व नुकीली गांठे होती है। वृक्षों के बीच-बीच काँटेदार झाड़ियाँ और घास के मैदान होते हैं। तराई के दक्षिणी भागों में सवाना प्रकार की सवाई घास उगती है। उत्तर प्रदेश और पश्चिम बंगाल में मूंज व कांस उगती है। मानसूनी वनों के प्रमुख वृक्ष आम, महुआ बरगद, शीशम, हल्दू, कीकर, बबूल आदि प्रमुख है। यह वन पूर्वी राजस्थान, काठियावाड़ तथा दक्षिण-पश्चिम उत्तर प्रदेश में विशेष रूप से पाया जाता है।

(4) मरुस्थलीय तथा अर्ध मरुस्थली वन :→ इस प्रकार की वनस्पति 50 cm से कम वर्षा वाले क्षेत्रों में होती है। वर्षा की कमी के कारण वृक्षों की पत्तियां कम, छोटी और काँटेदार होती है। वृक्षों की जड़े लम्बी होती है। इन वनों में बबूल, नागफनी, रामबांस, खेजड़ा, बेर, खजूर आदि शुष्क वनस्पति में उगने वाली प्रमुख किस्में है।

यह वनस्पति पंजाब, राजस्थान, गुजरात, मध्यप्रदेश, आदि राज्यों में पायी जाती है।

(5) मैंग्रोव अथवा ज्वारीय वन :→ यह वन प्रायद्वीप के पूर्वी एवं पश्चिमी तटवर्ती भागों तथा गंगा और ब्रह्मपुत्र के डेल्टा में उगते हैं जहां ज्वार के समय समुद्र का जल वृक्षों की जड़ों को सींचता है। यह प्रदेश कीचड़युक्त व दलदली होते हैं। वृक्षों की जड़ों के निकट समुद्र का जल एकत्रित होने से वे सड़ने एवं गलने लगते हैं। इन वनों में अनेक प्रकार के जहरीले कीड़े-मकोड़े, सर्प और चीते पाये जाते हैं।

यह वन भारत में महानदी, गोदावरी, कृष्णा, कावेरी, आदि प्रायद्वीप की नदियों के मुहानों पर तथा गंगा ब्रह्मपुत्र के डेल्टाई भाग में पाये जाते हैं। इन वनों में सुन्दरी वृक्ष तथा उनकी बहुत सी किस्में पाई जाती हैं।

(6) शीतोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वन :— यह वन नीलगिरी, अनामलाई, पलनी, शिवराय आदि ऊंचे पहाड़ी भागों की वनस्पतियां हैं। यह ऊंचाई के कारण शीतोष्ण कटिबंधीय और सदाबहार (जिसका पत्ता नहीं गिरता) है। इस प्रकार के वन समुद्र तल से 1500 मीटर की ऊंचाई पर प्रारम्भ हो जाते हैं। तीखी ढालों पर यह वन शीतोष्ण कटिबंधीय सदाबहार वनों में परिवर्तित हो जाते हैं। इन वनों में पीला चम्पा प्रमुख प्रकार है।

(7) हिमालय प्रदेशीय वनस्पति :→ यह वन हिमालय पर ऊंचाई के अनुसार जलवायु एवं वनस्पति में अन्तर पड़ता है। पूर्वी हिमालय में पश्चिमी हिमालय की अपेक्षा अधिक वर्षा होती है, इस लिए दोनों की वनस्पतियों में कुछ भिन्नता पायी जाती है। अतः यहां दो प्रकार के वन पाये जाते हैं :—

(क) पूर्वी हिमालय के वन।
(ख) पश्चिमी हिमालय के वन।

(क) पूर्वी हिमालय के वन :→ हिमालय पर नीचे से ऊपर चढ़ते हुए तापमान और वर्षा में अन्तर मिलता है। इस बदलते हुए तापमान और वर्षा का प्रभाव वनस्पति पर भी पड़ता है। 1200 से 3400 मीटर की ऊंचाई पर पूर्वी हिमालय के भागों में 125 cm. से भी अधिक वर्षा होती है, इस लिए सघन तराई के वन पाये जाते हैं। ये शीतोष्ण कटिबंधीय सदाबहार (जिसका पत्ता नहीं झड़ता) वन की भाँति हैं। इन वनों में दालचीनी, अमूरा, मिलेनिया, साल, मंगोलिया, लारेस, मिनोली, चन्दन शीशम, खैर और सेलम आदि के वृक्ष भी मिलते हैं। इनके अलावे अनेक प्रकार के लताओं, झाड़ियों और घास के उगने के कारण ये वन घने भी हो जाते हैं। लम्बी घास भी इन वनों में खूब उगती है।

3400 से 3600 मीटर की ऊंचाई पर शीतोष्ण कटिबंधीय प्रकार के वन उगते हैं। निचले हिस्सों में चौड़ी पत्ती के ओक, लारेल, मेपिल, बर्च, एलडर आदि ऊँचाई पर सिल्वर, फर, जनीपर, रोडोडेनड्रान, पाइन, स्प्रूस आदि शंकुधारी वन उगते हैं। वृक्षों का कद छोटा होता है। 4800 मीटर से अधिक ऊंचाई पर किसी भी प्रकार के वृक्ष नहीं

Scanned with CamScanner

पाये जाते हैं। केवल छोटी-छोटी घास उगती है, कुछ फूलों वाले पौधे भी उगते हैं।

(ख) पश्चिमी हिमालय के वन :→ पश्चिमी हिमालय में वर्षा की कमी का स्पष्ट प्रभाव पड़ता है। ऊँचाई के अनुसार वनस्पति के प्रकार में भी अन्तर पड़ता है।

900 मीटर ऊँचाई तक जहाँ वर्षा कम होती है, केवल झाड़ियाँ और छोटे छोटे वृक्ष उगते हैं। यह मरुस्थलीय वनस्पति का स्वरूप है। कुछ भागों में पशुचारण होता है। नदियों के निकटवर्ती भागों में अवश्य कुछ वृक्ष उगते हैं।

900 से 1800 मीटर ऊँचाई तक वर्षा की न्यूनता और कम तापमान के कारण चीड़ के वन बहुत मात्रा में पाये जाते हैं। इन वनों के लकड़ी काफी उपयोगी है। कम वर्षा की प्राप्ति के कारण यहाँ साल, सेमल, ढाक, शीशम, जामुन, बेर आदि के पतझड़ वृक्ष पाये जाते हैं।

1800 से 3000 मीटर की ऊँचाई पर समशीतोष्ण कटिबंधीय शंकुधारी वनस्पति मिलनी प्रारम्भ हो जाती है। निचली भागों में चौड़ी पत्ती वाले वृक्ष मिले-जुले मिलते हैं। वहाँ कम वर्षा एवं निम्न ताप पाये जाते हैं। यहाँ चीड़, देवदार, नीला पाइन, एलडर, एल्म, बर्च, पोपलार आदि के वृक्ष मिलते हैं।

2500 या 3000 मीटर के निकट पीला पाइन और सिल्वर फर के वृक्ष अधिक पाये जाते हैं।

3000 मीटर से ऊपर के भागों में पूर्वी हिमालय के समान अल्पाइन वनस्पति उगती है, जिसमें बर्च, सिल्वर फर और जूनीपर की प्रधानता होती है।